आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Recent Trends and Issues in Languages, Social Sciences and Commerce

Date of Publication
04 Jan. 2020

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www. विद्यावार्ता® .कॉम
YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary.

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 6.021 IIJIF FACTOR

Cosmos IMPACT FACTOR 5.234

Govt. of India, Trade Marks Registry Regd. No. 2611690

http:/www.printingarea.blogspot.com

विद्यावार्ता : Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 6.021(IIJIF)

24	डॉ. आर. डी. कांबळे,	समकालीन साहित्य आणि चारचौघी नाटकातील स्त्री प्रतिमा	132
25	प्रा. रेखा काशिनाथ पसाले.	समकालीन मराठी साहित्य आणि मराठी चित्रपट	135
26	डॉ. प्रियांका शंकर कुंभार	मराठी साहित्य आणि समकालीन अनुवादाचे स्वरुप	138
27	रोहिणी गजानन रेळेकर	प्रेषित : मानव आणि परग्रहवासीयांच्यातील भावबंध	145
28	डॉ. विजय विष्णू लोंढे	हिंदी दलित कहानी साहित्य की सीमाएँ	151
29	डॉ.पंडित बन्ने	सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट : जनसंचार का सशक्त माध्यम	157
30	डॉ. कल्पना किरण पाटोळे	'एक जमीन अपनी' : नारी जीवन की संघर्षगाथा	159
31	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	हिंदीकाव्य के शलाकाव्यक्तित्व: नागार्जुन	164
32	प्रा.नितीन हिंदुराव कुंभार	आज के युग में जनसंचार माध्यमों का योगदान (हिंदी भाषा के परिप्रेक्ष्य में)	167
33	डॉ. श्रीकांत पाटील	' झुनिया' उपन्यासमें मजदूर विमर्श	171
34	डॉ.अजयकुमार कृष्णा कांबळे	आत्मसन्मान के लिए जूझती नारियाँ : एक परिदृष्य	173
35	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	ममता कालिया के उपन्यासो में नारी	176
36	प्रा.भिमाशंकर गायकवाड	हिंदी पत्रकारीता का विकास	178
37	प्रा.अभिजीत कबीर शेवडे	दलित चेतना एवं दलित साहित्य की अवधारणा	181
38	डॉ. स्नेहल श्रीकांत गर्जेपाटील	दोहरा अभिशाप' पर स्त्री विमर्शमूलक वैचारिक मंथन	185
39	डॉ.मालोजी अर्जुन जगताप	दलित समाज के प्रतिसवर्णों की मानसिकता का यथार्थ अंकन :आगे रास्ता बंद है	188
40	प्रा. नीता पोपट साठे	"डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' के भूमि की ओर' नाटक में चित्रित सामाजिक संवेदना	191
41	डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत	स्त्री मन की अभिव्यक्ति : एक कहानी यह भी	193
42	प्रा.संगीता विष्णु भोसले	'कस्तूरी कुंडल बसै'आत्मकथा में नारी संवेदना	195
43	कविता दत्तु चव्हाण	हिंदी नाट्य साहित्य में नारी का चित्रण	200
44	शहिदा नजीर अत्तार	घुमंतू समाज : कल और आज	204
45	प्रा. स्मिता अभिजित वणिरे	''हिंदी साहित्य और सामाजिक संवेदना''	207
46	प्रा. रामहरि काकडे	हिंदी नाटकों में स्त्री विमर्श	209
47	प्रा.एल.एस. सिताफुले	ग्रामीण विकासात मत्स्य व्यवसायाची भूमिका:विशेष संदभ 'रत्नागिरी जिल्हा''	214
48	Dr.S. P. Bansode	Demonetization and Cashless Economy	219
49	Prof. B. A. Tarhal	A Study of Impact of E-Commerce on Indian Economy	222
50	Dr. Barale Santosh I.	Inclusive Education in India: A Critique	228
51	Dr. Bhoge D.B.	Problems and Prospects of Agriculture Labour in India	231
52	डॉ. ए. एस. नलवडे	आर्थिक विकास एक पर्यावरणीय समस्या आणि उपाययोजना	236
53	प्रसाद पांडुरंग दावणे,	भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या सक्षमीकरणामध्ये सेवाक्षेत्राचे योगदान	240
54	प्रा.तटाळे पदमाकर बळीराम	ग्रामीण विकासात सहकारी प्रक्रिया उद्योगाची भूमिका	245
55	Dr. Barale Santosh I.	Globalization and Women Empowerment: A Paradigm Shift	249
56	Dr. Stuti Bhrigu	RECENT TRENDS IN BANKING SECTOR	254

हिंदी नाटकों में स्त्री विमर्श

प्रा. रामहरि काकडे
सहायक प्राध्यापक एवं विभाग अध्यक्ष
हिंदी विभाग कला एवं विज्ञान महाविद्यालय
शिवाजी नगर गढ़ी, तहसील – गेवराई, जिला - बीड (431143)

भारतीय समाज में धार्मिक दृष्टि से स्त्री को देविरूप में देखा गया है।कुछ अपवादों को छोड दे तो आधुनिक काल के प्रारंभ तक भारतीय स्त्री की स्थिति दिन हीन ही रही है। अंग्रेज शासनकाल में हुए सामाजिक सुधार आंदोलन के कारण पहली बार भारतीय स्त्री की स्थिति में सुधारना का प्रयास किया गया। किंतु इस सुधार आंदोलन की गति बहुत कम थी। सन 1991 ई. की मुख्य आर्थिक नीति एवं उससे भारत में उपजे वैश्वीकरण के कारण व्यक्ति स्वतंत्रता का महत्व बड़ा। फलस्वरूप भारतीय स्त्री पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम करने लगी। इस प्रयास में उसे विभिन्न रुकावटों का सामना करना पड़ा। यह रूकावटें एक औरत के लिए नहीं तो समस्त स्त्री वर्ग के लिए थी। इसलिए पढ़ी-लिखी एवं जागृत स्त्री ने इस का रूकावटों के विरोध में एक आंदोलन चलाया। जिसे बहुत सारे पुरुषों ने भी समर्थन दिया। यह आंदोलन जीवन के सभी क्षेत्रों में था। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। अन्य साहित्यिक विधाओं के समान नाट्य विधा में भी स्त्री विमर्श का दौर चल पड़ा। संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन 1975 ई. को जागतिक महिला वर्ष घोषित किया इसके परिणाम स्वरूप इस आंदोलन को और अधिक गति प्राप्त हुई। वैसे कहा जाए तो स्त्री मुक्ति का स्वरूप नाट्य विधा के प्रारंभ से ही दृष्टिगत होता है। भारतेंदु का नाटक 'नीलदेवी' की नायिका नीलदेवी के माध्यम से वीरता एवं सशक्त नारी का चित्रण किया है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के परिणाम स्वरुप प्रसाद काल में त्याग एवं बलिदान आदि गुणों से युक्त नारी पात्रों का चित्रण किया गया है। "नारी राज्य की सीमा विस्तृत है और पुरुष की संकीर्ण। कठोरता का उदाहरण है पुरुष और कोमलता का विश्लेषण स्त्री जाति। पुरुष क्रूरता है तो स्त्री करूणा है।"[1]आधुनिक स्त्री विमर्श के संदर्भ में 'ध्रुवस्वामिनी' की नायिका ध्रुवस्वामिनी महत्वपूर्ण है। अपने ऊपर हो रहे अन्याय का विरोध करने वाली ध्रुवस्वामिनी पुरुषों के अधिकारों को चुनौती देती हुई कहती है, "पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु - संपत्ति समझ कर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है।"[2]प्रसाद ने ध्रुवस्वामिनी के माध्यम से नारी जागरण, विधवा विवाह, स्त्री अधिकार एवं स्त्री स्वतंत्रता के प्रश्न उठाए हैं।

भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति की घटना भारतीय समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण घटना है। साहित्य की अन्य विधाओं के समान नाट्यविधा पर भी ईस घटना का प्रभाव पड़ा। "स्वतंत्रता के उपरांत नारी के सम्मुख चिंतन के नये क्षितिज ऊभरे और नवीन कार्य - क्षेत्रों का विकास हुआ। भौतिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ ही भारतीय नारी की अभिवृत्तियों, गतिविधियों और जीवनमूल्यों में भी परिवर्तन आया है।"[3]इसके फलस्वरूप जगदीशचंद्र माथुर का 'शारदिया' उपेंद्रनाथ अश्क का 'अलग-अलग रास्ते' डॉ. लाल का 'मादा कैक्टस' विष्णु प्रभाकर का 'डॉक्टर' आदि नाटक स्त्री विमर्श के दृष्टि से

महत्वपूर्ण है। 'अलग-अलग रास्ते' की रानी परिस्थितियों से समझौता ना कर विद्रोह कर सडी - गली परंपराओं को चुनौती देती है। 'शारदीया' नाटक पुरुष के राजनीतिक षडयंत्रों का शिकार नारी का चित्रण करता है। 'मादा कैक्टस' की सुजाता अपने कलाकार पति अरविंद से प्रतिशोध लेने के लिए एक कलाकार से विवाह कर स्वयं अरविंद की कला पर विस्तृत लेख लिखकर अपनी कला संबंधी ग्रहिका शक्ति का परिचय देती है।

साठोत्तरी हिंदी नाटकों में स्त्री विमर्श का स्वर अधिक प्रबल दिखाई देता है। मोहन राकेश का नाटक 'आधे - अधूरे' डॉ. लाल का 'कर्फ्यू' रमेश बक्षी का 'देवयानी का कहना है' ग्मन्नू भंडारी का 'बिना दीवारों का घर' भीष्म साहनी का 'माधवी' सुरेंद्र वर्मा का 'शकुंतला की अंगूठी', 'आठवां सर्ग', 'द्रोपदी सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' शांति मेहरोत्रा का 'ठहरा हुआ पानी' कुसुम कुमार का 'सुनो शेफाली' प्रभाकर श्रोत्रिय का 'इला' सुशील कुमार सिंह का 'चार यारों की यार' मीराकांत का 'कंधे पर बैठा था शाप', 'हुमा को उड़ जाने दो', 'नेपथ्य राग' हृषीकेश सुलभ का 'अमली' स्वदेश दिपक का 'सबसे उदास कविता' आदि नाटकों के माध्यम से वर्तमान स्त्री का चित्रण हुआ है। इस नाटकों की स्त्री पात्र आधुनिक परिवेश से उपजी स्त्री पात्र है। यह स्त्री पात्र ग्रामीण परिवेश से हो या शहरी, शिक्षित या अशिक्षित। चाहे जो भी हो और उसे अपने हक एवं अधिकारों का ज्ञान है और वह अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ना भी जानती है। भले ही वह कभी विद्रोही बनती है तो कभी मौन। शंकर शेष का नाटक 'कोमल गांधार' की नायिका गांधारी के अंधे होने के कारण स्वयं के आंखों पर पट्टी बांधती है। डॉ.शंकर शेष ने गांधारी के चरित्र चित्रण में परिवर्तन कर ऊसे अपने ऊपर हुआ अन्याय का ज्ञान होने वाली गांधारी के रूप में चित्रित किया है। गांधारी को जब ज्ञात होता है कि उसका पति धृतराष्ट्र अंधा है। तब वह कहती है, "यह लोग समझ ले कि, स्त्री एक खाली जमीन नहीं है, जिसे आसानी से रौंदकर शांति से जिया जा सके। कुरुवंश को अपने इस अन्याय की किमत चुकानी ही होगी, दासी।"[4]भीष्म साहनी के नाटक की नायिका 'माधवी' जब स्वयं के पिता द्वारा उसे गालव को दान में दिया जाता है तब चुपचाप रहती है और नाटक के अंत तक पिता एवं प्रेमी के कर्तव्य पूर्ति का साधन बनी रहती है। लेकिन नाटक के अंत में माधवी के चरित्र में बदलाव आता है। जब उसे लगता है कि पिता एवं प्रेमी द्वारा उसका केवल इस्तेमाल किया गया है, तब वह अनुष्ठान कर पुनः कौमार्य एवं सौंदर्य प्राप्ति से इंकार कर देती है और एक साथ पिता एवं प्रेमी से प्रतिशोध लेती है। "माधवी का वानप्रस्थी होना संपूर्ण समाज का नकार है, एक तरह से समाज से नारी का लुप्त होना है। माधवी का वानप्रस्थी होना स्वयं के अस्तित्व को समाप्त करने के सामान भी है और अपने अस्तित्व को प्रगट करना भी है। --- इस कदम से वह यह भी स्पष्ट कर देती है, उसे केवल भोग्या रुप स्वीकार नहीं है कि, उस की अपनी इच्छाएं भी है, उस का अपना अस्तित्व भी है।"[5]प्रभाकर श्रोत्रिय का नाटक 'इला' की नायिका इला के लिंग रूपांतरण करके प्रद्युम्न बनाने की प्रक्रिया के विरोध में महारानी घोषणा करती है, "श्रद्धा: (अपनी रौ में) - - - और मैं अपने वध के लिए प्रस्तुत हूँ। (घोषणा करती - सी) परंतु सुन लीजिए आप - - - श्रद्धा प्रतिज्ञा करती है कि वह दुबारा माँ नहीं बनेगी; वह राजवंश के छल को अपने रक्त से नहीं पालेगी।"[6]इन नाटकों में स्त्री विद्रोह का जो स्वर है वह मौन विद्रोह कहा जा सकता है। यह स्त्री पात्र विद्रोह तो करती है पर उसे सामाजिक रूप नहीं दे पाती।

'आधे - अधूरे', 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक', 'सुनो शेफाली', 'बिना दीवारों का घर', 'एक और अजनबी', 'कर्फ्यू', 'तिलचट्टा', 'देवयानी का कहना है', 'चार यारों की यार' आदि नाटकों में स्त्री विमर्श का स्वर अधिक मुखर हुआ है। इन नाटकों में स्त्री अपनी पारंपरिक छवि को तोड़कर आगे चली जाती है। 'बिना दीवारों का घर' की शोभा शादी के बाद पढ़ाई पूरी कर स्कूल की प्रधानाध्यापक बनती है। वह एक साथ घर एवं स्कूल संभालने लगती है, लेकिन उसका पति उसकी इस भूमिका से उसे संशय की दृष्टि से देखता है। वह उसे ऊसी रुप में देखना चाहता है जो शादी के समय थी। "घर में घुसी तो गुस्से का नाम निशान तक नहीं था चेहरे पर। मुझे देखने ही शायद गुस्सा उठना पड़ रहा है क्यों?"[7] 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' की शीलवती का पति राजा ओक्काक नपुंसक है। पुत्र प्राप्ति के लिए शिलवती को नियोग प्रथा के अनुसार पर पुरुष से संतान उत्पत्ति करने के लिए कहा जाता है। परंपरा से बंधी शिलवती को यह बात कठिन लगती है। लेकिन जब कोई रास्ता नहीं रहता तब वह अपने बाल सखा आर्य प्रतोष को चुनती है। एक पुत्र के लिए बालमित्र के साथ संभोग कर चुकी शिलवती और राजा ओक्काक की धर्मपत्नी शिलवती में काफी परिवर्तन आता है। संभोग सुख के बाद उसका कथन है, "नारी की सार्थकता मातृत्व में नहीं है, है केवल पुरुष से संयोग के इस सुख में। मातृत्व केवल एक गौन उपादान है - - - जैसे दही से निकलता तो मक्खन है, लेकिन ललछट में थोड़ी सी छाछ भी बच जाती है - - - हम सब छाछ है।"[8] 'चार यारों की यार' की नायिका बिंदिया पहले पति की प्रताड़ना से छूटने के लिए दूसरे से शादी करती है, लेकिन दूसरे पति से संभोग सुख नहीं मिलने पर अन्य तीन मित्रों भोला, दीक्षित और शहीद से शारीरिक संबंध बनाती है। उसके यह संबंध जब पति को मालूम होते हैं तब उनके आपस के झगड़े में वह कहती है, "ओ मास्टर की औलाद। क्या कीड़ों की तरह बिजबिजा रहा है। धोखेबाज भडुए, तूने मेरी जिंदगी बर्बाद की है। अगर तू मुझे अपनी मर्दानगी दिखाने के लिए ब्याह कर नहीं लाता तो क्यों मुझे अपनी आग बुझाने के लिए चार चार यार रखने पड़ते।"[9]डॉ. लाल का नाटक 'करफ्यू' की मनीषा अनेक पुरुषों के साथ संबंध बनाना ही नारी जीवन की सार्थकता समझती है। तभी तो वह गौतम को सेक्स के लिए ऊकसाती है, "यह टाई निकाल दो। लाओ मैं तुम्हारी यह कमी निकाल दूँ। इसी तरह तुम भी मेरा कुर्ता निकाल दो।- - - निकालो - - - नहीं निकलता तो फाड दो।"[10]उसका यह वर्तन समाज की सभी मर्यादाओं को नकरता है। 'तिलचिट्टा' नाटक की केशी भी यौन संबंधों का वर्णन करती है। 'देवयानी का कहना है' कि देवयानी पति पत्नी के बंधनों को तोड़कर मुक्त सेक्स की कामना करती है। वह शादी को एक समझौता समझती है, "अविवाहित बिस्तरबाजी में खर्च अधिक है, डर ज्यादा है। विवाह का सर्टिफिकेट मिल जाए तो सुबह से रात तक के सब काम हो जाते तो नपे - तूले खर्च में सुबह से शाम तक के सब काम हो जाते है।"[11] 'एक और अजनबी' की शानी मर्यादा को ताक पर चढ़ाती है। वह एक पुरुष के साथ रहकर जीवन जीने में विश्वास नहीं रखती।

ऊपरोक्त नाटकों में स्त्रियों का जो चित्रण है व्यक्तिगत है। लेकिन सभी स्त्रियाँ अपने तक सीमित न रहकर समाज एवं देश के लिए भी भूमिका निभाती दिखाई देती हैं। इन स्त्री पात्रों ने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार आदि का पुरजोर विरोध किया है। 'सुनो शेफाली', 'पोस्टर', 'सबसे उदास कविता', 'खूबसूरत बहू', 'मौजूदा हालात को देखते हुए', 'नर-नारी', 'विषवंश', 'मुन्नीबाई', 'हवाओं का विद्रोह' आदि नाटकों की स्त्री पात्र इस दृष्टि

से महत्वपूर्ण है। ' सन सत्तावन का किस्सा : अजुजुन जिसा' की नायिका देश प्रेम के लिए अंग्रेजों से लड़ने के लिए पुरुष क लिबास पहनकर सैनिक बनती है। संपूर्ण नाटक में उसका देश प्रेम एवं वीरता की भावना दृष्टिगत होती है। नाटक 'सबसे उदास कविता' की अपूर्वा अपनी एक राजनीतिक विचारधारा को लेकर भ्रष्ट व्यवस्था से लडती है। नाटक की प्रस्तावना में उसके इस साहस को 'मृत्युहीन दुस्साहस' कहा गया है। वह एक साहसी स्त्री है। वह अपने सिद्धांतों पर चलकर व्यवस्था से लड़ती है। अंत में जेलर का यह कथन महत्वपूर्ण है, "कल सुबह तुम्हें फांसी लगेगी और तुम मुस्कुरा रही हो।"[12] 'सुनो शेफाली' की नायिका शेफाली को जब ज्ञात होता है कि बकुल उससे विवाह इसीलिए करना चाहता है कि, समाज को दिखा सके उसने एक हरिजन लड़की से विवाह किया है। तो वह बकुल के विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा देती है। "शेफाली नारीत्व की संकल्पना शक्ति के रूप में उभरी है। उसकी निजता में आज की नारी का स्वाभिमान अपना अपना रूप लेकर ऊंचा हुआ है।"[13]राजेश जैन का नाटक 'विषवंश' की नायिका रंदा भी अन्यायी और अत्याचारी राजा का अंत करने के लिए सामान्य ग्रामीण कन्या से विषकन्या बनती है। अपनी देशभक्ति एवं साहस के बल पर स्त्री लंपट राजा का अंत कर संपूर्ण प्रजा को भयमुक्त कर देती है। उसका यह कथन स्त्री विमर्श की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, "रंदा: तो क्या आप समझते हैं कि स्त्री गाय होती है, जैसे चाहे दुह लिया? दलित मैं नहीं बनी, बल्कि मैंने आपके और उच्चकुलीन राजा के भीतर की शुद्रता को खींचकर बाहर निकाला और कुचल दिया। वास्तविक दलित आप लोगों की यह सामंती प्रवृत्ति थी जिस पर मैंने अपने ही ढंग से अत्याचार किया, जिससे आप जान सके कि स्वार्थसनी पुरुषोचित धारणाओं का करारा जवाब दे सकती है स्त्री।"[14]

निष्कर्षत: कह सकते है कि, हिंदी नाट्य साहित्य के प्रारंभ से ही नाटकों में स्त्रियों की उपस्थिति रही है। भारतीय स्वतंत्रता, वैश्वीकरण और स्त्री विमर्श के परिणामस्वरूप स्त्रियों में बदलाव आया है। जिसका प्रतिबिंब नाटकों के स्त्री पात्रों में दृष्टिगत होता है। पारंपरिक रूप में आदर्श एवं परिवार तक सीमित रहने वाली स्त्री आज पारंपारिक न.रहकर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलकर काम कर रही है। वह शिक्षित होकर कार्यालय एवं घर दोनों संभाल रही है। इससे उसे तनाव का भी सामना करना पड़ रहा है। जैसे 'आधे - अधूरे' की सावित्री। वह समर्थ होकर अपनी स्वतंत्रता का आनंद लेना चाहती है। अति स्वतंत्रता के कारण व पुरुषों से संबंध बनाने में भी हिचकीचाहती नहीं। जैसे 'चार यारों की यार' की बिंदिया। पर यह भी सच है कि उसने अपना स्वातंत्र केवल देह तक सीमित न रखकर है समाज एवं देश के लिए भी संघर्ष किया है। जैसे 'विशवंष' की रंदा 'सुनो शेफाली' की से शेफाली 'सन सत्तावन का किस्सा : अजीजुन निसा' की अजीजुन आदि स्त्री पात्र। कह सकते है कि, समकालीन हिंदी नाटकों में स्त्री विमर्श सशक्त रुप से प्रवाहमान है।

संदर्भ सूची

1) अजात शत्रु जयशंकर प्रसाद पृ.क्र.125

2) ध्रुवस्वामिनी जयशंकर प्रसाद पृ.क्र. 28

3) आधुनिक हिंदी नाटक : चरित्र सृष्टि के आयाम डॉ.लक्ष्मीराय पृ.क्र. 82

4) कोमल गांधार डॉ.शंकर शेष पृ.क्र. 28

5) समकालीन भारतीय साहित्य जनवरी-फरवरी 1999 वेद प्रकाश भारद्वाज का आलेख पृ.क्र. 168

6) इला प्रभाकर श्रोत्रिय पृ.क्र. 41

7) बिना दीवारों का घर मन्नू भण्डारी पृ.क्र. 54

8) सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक सुरेंद्र वर्मा पृ. क्र. 52

9) चार यारों की यार पृ. क्र. 79

10) करफ्यू डॉ. लाल पृ.क्र. 42

11) देवयानी का कहना है पृ.क्र. 26

12) सबसे उदास कविता पृ.क्र. 75

13) हिंदी नाटक आज तक : डॉ. विना गौतम पृ. क्र. 350

14) विशवंष राजेश जैन पृ. क्र. 62